

श्री राजराजेश्वरी स्तोत्र

''या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मी :
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धि।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवी विश्वम्।''



निशुल्क
वितरण
अमर नाथ त्रिसल
हाउस फॉर ऐजड
अम्बफला, जम्मू

अथ गणेशकवचम्

अस्य श्रीगणेशकवचस्य भृगुऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीगजवदनो देवता, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं, अमुककामनासिद्धयर्थे जपे पाठे वा विनियोगः।। ।। अथ ध्यानम् ।। गजवदनमचिन्त्यं तीक्ष्णदन्तं त्रिनेत्रं बृहदुदरमशेषव्यक्तिरूपं पुराणम् । अमरवरसुपूज्यं रक्तवर्णं सुरेशं पशुपतिसुतमीशं विघ्नराजं नमामि ।। ।। ऊँ शिरावत्वीशपुत्रो मे बालं पातु विनायकः । त्रिनेत्रः पातु नेत्रे में शूर्पकर्णस्तथा श्रुती ।। हेरंबो रक्षतु घ्राणं मुखं पातु गजाननः । जिह्वां पातु गणेशो में कण्ठं श्रीकण्ठवल्लभः ।। स्कन्दौ महाबलः पातु भुजौ में पातु विघ्नहा । करौ परशुभृत्पातु नाभिं सिन्दूरभूषितः ।। जघनं पार्वतीपुत्रस्तूरू मे पातु पाशभृत् । जानुनी जगतां नाथो जङ्घे. मूषकवाहनः ।। गुल्फौ पद्मासनः पातु पादौ दुर्दैत्यदर्पहा । एकदन्तोऽग्रतः पातु पृष्ठं पातु गणाधिपः ।। पार्श्वौ तु मोद काहारो दिग्विदिक्षु च सिद्धिदः । व्रजतस्तिष्ठतो वापि जाग्रतः स्वपतोपि वा ।। चतुर्थीवल्लभो देवो पातु मे 'भुक्तिमुक्तिदः ।। इदं पवित्रं यः स्तोत्रं चतुर्थ्यां नियतः पठेत् । सिन्दूररक्तपुष्पै श्च दूर्वयाऽऽपूज्य विघ्नपम् ।। राजा राजसुतो वापि राजपत्नी कुलं बलम् । तस्यावश्यं भवेद्वश्यो विघ्नराजप्रसादतः ।। समन्त्रयत्रं यः स्तोत्रं करे संलिख्य धारयेत् । धनधान्यसमृद्धिस्तु भवत्येव न संशयः ।। वागभवं कामराजस्य माया चादौ विधीयताम् । हुंनमो वक्रतुण्डाय मध्ये यस्त जपेन्नरः ।। रसनालसदेकाग्रं षडङ्गं रसपूर्वकम् । हुत्वा दत्वा च विधिवन्नष्टद्रव्यं समेष्यति ।। यं यं काममभिध्याय कुरुते कर्म किञ्चन तंतं सर्वमवान्पोति वक्रतुण्डप्रसादतः ।। भवेदव्याहतै श्वयः स गणेशप्रसादतः ।। इति श्रीभविष्यत्पुराणे गणेशकवचं समाप्तम् ।।

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुसंण्डीं शिरः शङं.

सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।

यामस्तौत्सवपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभं।

नीलाश्मद्यु तिमाऽस्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम्।।

अक्षस्रक्परशुंगदेषुकुलिशंपद्मं धनुष्कुडिकां दण्ड

शक्तिमसिं च चर्म जलदं घण्टां सुराभाजनम्। शूलं

पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननांः सेवे

सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मी सरोजस्थिताम्

घंटाशूलहलानि शङ.मुसले चक्रं धनुः सायकं

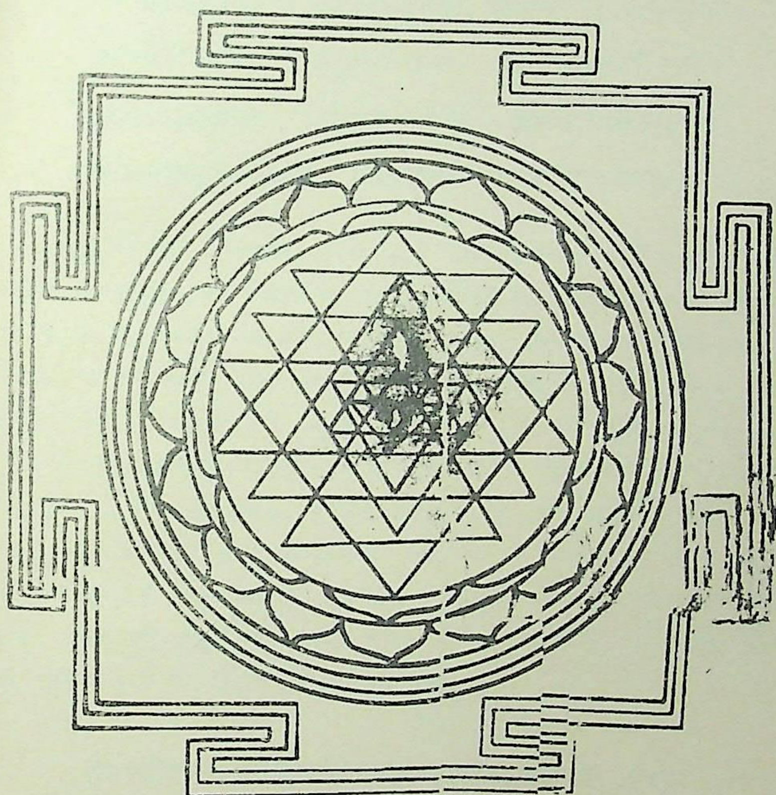
हस्ताब्जैदर्धतीं धनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।

गौरीदेहसमुदवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र

सरस्वतीमनुभुजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।

"श्री चक्र"

Abode of Tri-par-Excellence.



❀ ओं नमो भवान्यै ❀

ॐ छन्दःपादयुगा निरुक्तसुमुखा शिक्षा च जंघायुगा
ऋग्वेदोरुयुगा यजुःसुजघना या सामवेदोदरा ।
तर्कन्यायकुचा श्रुतिस्मृतियुक् काव्यादिवेदानना,
वेदान्तामृतलोचना भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥१॥

भक्तकवि श्री राजराजेश्वरी के सांग रूप का वर्णन करते हैं। इस प्रकार उन्होंने भगवती के भिन्न २ अंगों पर भिन्न २ शास्त्रों का आरोप किया है जैसे वह लिखते हैं कि भगवती के दो पाद छन्दः शास्त्र (अर्थात् पिंगलादि सूत्र) हैं। निरुक्त शास्त्र अर्थात् वेद का कोष सुन्दर मुख है। शिक्षाशास्त्र इसकी दोनों (जांघ) जंघाएँ हैं। ऋग्वेद इसकी दो ऊरू हैं तथा यजुर्वेद सुन्दर जघन है एवं सामवेद जिसका पेट है इसी प्रकार तर्कशास्त्र तथा न्यायशास्त्रों (Logic & Philosophy) जिसके दो स्तन है श्रुति यानि लोकोक्ति स्मृति अर्थात् मनु पाराशर आदि से कथित स्मृति शास्त्र सहित काव्यादि जो वेद का रूप है उस महामाया का मुख है। वेदान्त अर्थात् उपनिषद्-ईशावस्यादि ज्ञान देकर जो अमृत्व को प्राप्त कराते है उस भगवती अनन्तशक्ति सम्पन्ना श्री संवित् स्वरूपा श्रीराजराजेश्वरी के नयन हैं।

ईशाधीश्वरयोगिवृन्दविधृता स्वानन्दभूता परा
पश्यन्तीत्यनु मध्यमा विलसती श्रीवैखरीरूपिणी ।
आत्मानात्मविचारिणी त्रिनयना विद्यावतीभारती,
श्रीचक्रप्रियबिंदुतर्पणपरा श्रीराजराजेश्वरी ॥२॥

यहाँ पर कवि जगन्माता को मूलाधार सब कारणों का होने का वर्णन करते हैं।

सामर्थ्यवान ईश्वर, सदाशिव तथा अन्य योगियों के समूह द्वारा जो धारण की गई है तथा जो निजानन्द स्वरूपा परा, पश्यन्ती एवं मध्यमा से शोभायमान है और जो वैखरी (दिव्यवाक्शक्ति) (Initution) के रूप में उल्लसित होती है और जो आत्मज्ञान एवं भौतिक पदार्थों का स्पष्ट ज्ञान देने वाली है। सूर्य, चन्द्र तथा अग्नि, रूपी तीन नेत्रों वाली है तथा जो विद्या अर्थात् ज्ञान विज्ञान रूपा वाक् शक्तिस्वरूपा है ऐसी ही श्री राजराजेश्वरी प्रिय बिंदु को तृप्त करने में तत्पर है। ॥२॥

कल्याणायुतपूर्णबिम्बवदना पूर्णेश्वरी नंदिनी
पूर्णा पूर्णतरा परेशमहिषी पूर्णामृतास्वादिनी।
सम्पूर्णा परमोत्तमामृतकला विद्यावती भारती
श्रीचक्र० ॥३॥

कल्याणकारिणी भगवती जो अनेक मुखों में प्रतिबिम्बित है अर्थात् अनेकता में एक रूपवाली है तथा पूर्ण स्वातन्त्र्य शक्तिरूप ऐश्वर्य शालिनी, तथा जो आनन्द देने वाली परिपूर्ण एवं पूर्ण से भी पूर्ण जगत के कारणस्वरूप परम-शिव की शक्ति स्वरूपा चित् शक्ति है (Cosmic Energy) और परि-पूर्ण चैतन्य रूपी अमृत (Nector of consciousness) का आस्वाद कराने वाली है. जो स्वयं ही सम्पूर्ण है और जिसको किसी की अपेक्षा नहीं रहती है। सर्वश्रेष्ठ तथा उत्तम अमृत की कलाओं ले युक्त विद्याओं वाली है अर्थात जो प्रवृति, निवृति इत्यादि कलाओं के अतिरिक्त अमृतकला स्वरूप है तथा जो अनुग्रह करने पर अपने भक्तों को संवित स्वरूप (self conscious) बनाती है ऐसी ही श्री राज राजेश्वरी श्रीचक्र के मूलाधार प्रियबिन्दु को तृप्त करने में तत्पर है।

एकाकारमनेकवर्णविविधाकारैकचित् रूपिणी
चैतन्यात्मकएकचक्ररचिता चक्रांगएकाकिनी।
भावाभावविभाविनी भयहरा सद्भक्तिचिंतामणिः
श्री चक्र० ॥४॥

एक ही मूल वर्ण अकार के स्वरूप में होती हुई भी अनेक वर्णों तथा विविध स्वरूपों में विभक्त होती हुई जो एक मात्र चित् स्वरूपा हैं। चैतन्यात्मक एक ही चक्र द्वारा जो सृजित हुई है अर्थात् जो चैतन्य शक्ति से सम्पूर्ण रूप में उल्लासित होती है। जो देवी चक्र स्वरूप है अर्थात् चक्र के समान घूमती है जो लक्षण जगत के क्रमिक विकास तथा परिवर्तन (Evolution) and Revolution) का सूचक है। भाव तथा अभाव (सत्ता शून्यता) का बोध कराने वाली तथा अज्ञान रूपी भय को दूर करने वाली एवं श्रद्धालु भक्तों को अभिष्ट फल देने के कारण जो चिंतामणि स्वरूपा है, ऐसी ही श्री राज-राजेश्वरी श्री चक्र के प्रिय बिंदु (विश्व के बीज़) को अपनी शक्ति से तृप्त करने में तत्पर हैं। ॥४॥

लक्ष्यालक्ष्यनिरीक्षणा निरूपमा रुद्राक्षमालाधरा
साक्षात्कारणदक्षवंश कलिता दीर्घातिदीर्घेश्वरी।
भद्राभद्रवरप्रदा भगवती भद्रेश्वरीभद्रदा
श्री चक्र० ॥५॥

जो अनुपम देवी दृश्य (जगत्) अदृश्य (अलक्ष्य, शून्यादि) का दर्शन कराने वाली रुद्राक्षमाला धारण करती हैं तथा जो दक्ष प्रजापति के वंश में सती के रूप में अविर्भूत हुई, जिसका व्याप्त से भी अतिव्याप्त अर्थात् अति विशाल स्वरूप है जो कल्याणकारणी भद्रपुरुषों को वर देने वाली भगवती है (षडऐश्वर्य्य शालिनी अर्थात् ज्ञान, विज्ञान, यश, श्री इत्यादि से युक्त) है ऐसी ही आद्य शक्ति श्री चक्र के प्रिय बिंदु को तृप्त करने में तत्पर है। ॥५॥

ह्रीं बीजानलनादबिंदुभरिता सत्कार (ओंकार) नादात्मिका,
ब्रह्मानंद घनोदरी गुणवती ज्ञानेश्वरी ज्ञानदा।
इच्छाज्ञानक्रियावती जितवती गन्धर्वसंसेविता
श्री चक्र० ॥६॥

जो ह्रीं बीजाक्षर (ह=आकाश र् = तेज, ं = शक्ति, ह्रीं ह्र धातु से

बना है जिसका अर्थ लज्जा है ह्रीं, शब्द तंत्र शास्त्र में प्रणव का महत्व रखता है) में प्रकाश रूपों अनल से नाद बिंदु पूर्ण है अर्थात् जो ह्रीं एं सोः बीज मंत्रों से भूषित है तथा ओंकार नाद रूपी शब्द से परिपूर्ण है। ब्रह्मानन्दघन जिसके उदर में हैं अर्थात् जो ब्रह्मानन्द स्वरूपा है, (प्रकट रूप) में जो अव्यक्त (गुणातीत) से व्यक्त बनकर सत, रज तथा तम त्रिगुणस्वरूप धारण करती है। चैतन्य ज्ञान की अधिष्ठातृ देवी है। इच्छा ज्ञान तथा क्रिया शक्तियां जिसके अधीन है एवं जो विजयशील तथा गंधर्वों द्वारा पूजित है ऐसी ही राज राजेश्वरी श्री चक्र के बिंदु को तृप्त करने में तत्पर है। ॥६॥

हर्षोन्मत्तसुवर्णपात्रभरिता पाश्वोन्नता घूर्णिता
हुंकार प्रियशब्दब्रह्म (राशि) निरता स्वारस्वतोल्लासिनी।
सारासारविचारचारुचरिता वर्णाश्रमाकारिणी,
श्री चक्र० ॥७॥

जो महामाया हर्ष अर्थात् परिपूर्ण आनन्द से उन्मत्त हुई है सुवर्ण अंगों से परिपूर्ण है तथा ऊँचे स्कन्धों वाली अपने आप में ही चक्कर काटती (घूर्णित) हैं, हुंकार बीज शब्द ब्रह्म रूप ही जिसका प्रिय है अर्थात् हुंकार के प्रिय शब्द ब्रह्म स्वरूप में ही जो लीन है अर्थात् (स्वयं ही है)। सरस्वती के उपासकों को जो उल्लास करने वाली (पूर्ण विद्या देने वाली) है सार तथा असार निर्णय करना जिसका स्वभाव है, वर्ण और आश्रम के आकार स्वरूप में जो दिखाई देनेवाली है ऐसी श्री राज राजेश्वरी श्री चक्र के प्रिय बिंदु को तृप्त करने में तत्पर है। ॥७॥

सर्वज्ञानकलावती सकरुणा सन्नादिनी नन्दिनी,
सर्वान्तर्गतशालिनी शिवतनूसन्दीपिणी दीपिनी।
संयोगप्रियरूपिणी प्रियवती प्रीता प्रतापोन्नता।
श्रीचक्र० ॥८॥

संपूर्ण ज्ञान तथा कलाओं से युक्त, दया से पूर्ण, अत्युत्तम शब्दरूप का

उच्चारण करने वाली अर्थात् सत् शब्द प्रणव को नित्य उच्चारण करने वाली तथा आनन्द देने वाली, सब के भीतर विराजमान शिव के शरीर को उद्दीप्त करने वाली, ज्ञानमय प्रकाश देनेवाली, संयोग अर्थात् इडा, पिंगला तथा सुषम्ना ाडी के संयोग से प्राप्त प्रियरूप को देने वाली, प्रिय से युक्त प्रसन्ना सब से प्यार की गई अर्थात् सबसे वांछित प्रताप में बडी चढी अर्थात् सब से श्रेष्ठ, ऐसे गुणों से युक्त श्री राज राजेश्वरी श्री चक्र के प्रियबिंदु (अखिल ब्रह्माण्ड के आधार) को तृप्त करने में तत्पर है।

कर्माकर्मविवर्जिता कुलवती कर्मप्रदा कौलिनी,
कारुण्यावधि सर्वकर्मनिरता सिंधुप्रिया शालिनी।
पूर्णब्रह्मसनातनान्तरगता ज्ञेया स्वयोगात्मिका,
श्री चक्र० ॥९॥

कर्म तथा अकर्म से रहित कुल शक्ति स्वरूपा अर्थात ब्रह्ममयी सत्कर्म-सत् क्रिया देने वाली, कौल ज्ञान यानो सृज्जन से प्रलय तक ज्ञान (creation to Destruction) देने वाली, दया से परिपूर्ण, सब कर्मों मे संलग्न, समुद्र को पुत्री महालक्ष्मी, सौंदर्य वाली. पूर्ण ब्रह्म के अन्तर सदा रहने वाली जो स्वयं ही ज्ञान का विषय है और स्वयं ही योग स्वरूपा है ऐसे गुणों वाली श्री राज राजेश्वरी श्री चक्र के प्रियबिंदु को तृप्त करने में तत्पर है। ॥९॥

हस्तिकुम्भसदृक्पयोधरवरा पीनोन्नता नम्रगा,
हाराद्याभरणा सुरेन्द्र विनुता शृङ्गाटपीठालया।
योन्याकारकयोनिमुद्रितकरा नित्यं सुवर्णात्मिका,
श्री चक्र० ॥१०॥

हाथी के कुम्भ के समान उत्तम मोटे तथा उन्नत स्तनों वाली किंचित नम्रभूत (झुक कर) चलने वाली हारादि आभूषणों से शोभित, इन्द्र से स्तुति की गई। शृङ्गार पीठ (श्री चक्र का मूल त्रिकोण) ही जिसका निवासस्थान है, योनि के समान आकार वाली तथा योनि मुद्रा में जिसके हाथ मुद्रित हैं

जो तीनों कालों में सुवर्ण जैसी भ्राजमान है ऐसे ही गुणों वाली श्री राज राजेश्वरी श्री चक्र के प्रिय बिंदु को तृप्त करने में तत्पर है। ॥१०॥

लक्ष्मीलक्षणपूर्णकुम्भवरदालीला विनोदस्थिता,
लाक्षारञ्जित पद्मपाद युगला ब्रह्माण्डसंसेविता।
लोकालोकितलोक कामजयिनी लोकाश्रयाङ्काश्रया,
श्री च० ॥११॥

लक्ष्मी के चिह्नों से युक्त पूर्ण कुम्भ (घट) रूप वर देने वाली लीला विनोद में लगी हुई अर्थात् संसारिक लीला रचना में ही जिसको विनोद प्राप्त होता है। महावर जैसे रंग से रंगे हुए दो चरण कमलों वाली समस्त ब्रह्माण्ड की आरध्य देवी तीनों लोकों (भू, भुवः, स्वः) को आलोकित (प्रकाशित) करने वाली, लोगों को काम (इच्छा) पर विजय देने वाली, तीन लोकों की आश्रय तथा शिव की गोद में रहने वाली ऐसी ही गुणवती श्री राज राजेश्वरी श्री चक्र के प्रिय बिंदु को तृप्त करने में तत्पर है। ॥११॥

ह्रींकाराङ्कितशंकरप्रियतनुः श्रीयोगपीठेश्वरी,
माङ्गल्यायुतपङ्कजाभनयना माङ्गल्यसिद्धिप्रदा।
तारुण्यात्तपसार्चिता तरुणिका तंत्रोपमातन्विता,
श्री चक्र० ॥१२॥

तांत्रिक बीजाक्षर ह्रीं से अंकित शंकर का प्रिय शरीर तथा योगपीठ की अधीश्वरी, मांगल्य रूप हज़ारों कमलों की छटा (शोभा) जैसे नयनों वाली, मंगल सिद्धि को देने वाली, युवावस्था में तप से अर्चित होने के कारण पूजित जो युवावस्था में झूमती हुई तंत्र शास्त्रों में उपमाओं द्वारा सुविसतृत है अर्थात् जिसका स्वरूप तंत्रशास्त्र में विविध रूप से वर्णित है, ऐसी श्री राज राजेश्वरी श्री चक्र के प्रिय बिन्दु को तृप्त करने में तत्पर है।

सर्वेशाङ्गविहारिणी सकरुणा सर्वेश्वरी सर्वगा,
सत्या सर्वमयी सहस्रदलगा सप्तार्णवोपस्थिता।
सङ्गासङ्गविवर्जिता सुखकरी बालार्ककोटिप्रभा,
श्रीचक्र० ।१३।।

सबों के स्वामी परमशिव के अङ्गों में चित् शक्ति के रुप में विहार (क्रीड़ा) करने वाली दया सहित सबों की स्वामिनी (अर्थात्) ब्रह्मा, विष्णु और शिव इत्यादि की ईश्वरी सब स्थानों में व्यापक सत्य स्वरूपा (भूत, भविष्यत् तथा वर्तमान तीनों कालों में व्याप्त) दृश्य तथा अदृश्य में समाई हुई, ब्रह्मरंध्र के सहस्रदल में व्याप्त सात समुद्रों में उपस्थित, संग तथा असंग (आसक्ति तथा निरासक्ति (Attachment and Detachment) से रहित आनंद को देने वाली, उदय होते करोड़ों सूर्य्य के समान दीप्तिवाली, ऐसे ही श्री राज राजेश्वरी श्री चक्र के बिन्दु को तृप्त करने में तत्पर है। ।।१३।।

लक्ष्मीशादिविरिञ्चिचक्रमुकुटाद्यष्टाङ्गपीठार्चिता,
सूर्येन्द्वग्निमयैकपीठनिलया चिन्मात्रकौलेश्वरी।
गोप्त्री गुर्विणिगर्विता गगनगा गङ्गा गणेशप्रिया,
श्रीचक्र० ।।१४।।

लक्ष्मी के स्वामी विष्णु, शंकर तथा ब्रह्मा के मुकटादिकों से अष्टकोण पीठ पर पूजित, सूर्य, चन्द्र तथा अग्नि के प्रकाशरूप एक पीठ (मूल त्रिकोण) में निवास करने वाली, चैतन्य (सम्वित् स्वरुपा) कुलस्वरूपा ईश्वरी है। रक्षिका तथा गुरुत्तरा होके आप माननीय तथा आकाश-गामिनी (अर्थात् महापुन्य में प्राप्त होने वाली) एवं पृथ्वी पर गंगा के रूप में प्रकट हुई है, गणेश अर्थात् इन्द्रिया गणों का जो स्वामी है, उसकी जो (इष्ट) सब से अधिक प्रिय है, ऐसी ही श्री राज राजेश्वरी श्री चक्र के प्रिय बिन्दु को तृप्त करने में तत्पर है। ।।१४।।

कादिक्षान्तसुवर्णबिन्दुसुतनुः स्वर्णादिसिंहासना
नानारत्नविचित्रचित्ररचिता चातुर्यचिन्तामणिः ।
चित्तानन्दविधायिनी सुविपुला कोटित्रयीश्यम्बिका
श्रीचक्र० ॥१५॥

क से लेकर क्ष तक (कवर्ग से लेकर संयुक्त वर्णो तक) तथा बिंदु से युक्त जिसका सुन्दर शरीर है अर्थात् जो वाग्देवी वर्ण स्वरुपा है, तथा जो सोने के सिंहासन पर विराजमान है एवं अनेक प्रकार के रत्नों से जिसका चित्र (स्वरूप) उज्जवल बना हुआ है तथा चतुर्ता का चिन्तमणि धारण की हुई, ऐसे ही जिसके प्रदत्त चातुर्य्य द्वारा भक्तों की सब चिंताए दूर हो जाती है। चैतन्य आनन्द को उत्पन्न करने वाली बहुत विस्तृत, तीस करोड देवताओं की जो स्वामिनी है, ऐसी ही श्री राज राजेश्वरी श्री चक्र के प्रिय बिंदु को तृप्त करने में तत्पर है।

ह्रींकारत्रयरूपिणी समयिनी संसारिणी हंसिनी,
वामाचारपरायणा सुमुकुटा बीजावती मुद्रिणी ।
कामाक्षी करुणाविचित्ररचिता श्री श्री त्रिमूर्त्यात्मिका,
श्रीचक्र० ॥१६॥

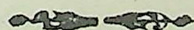
ह्रीं, श्रीं, क्लीम् इन तीनों रूपों में जिसका स्वरूप व्यक्त है। तथा जो ब्रह्माण्ड में काल (समयिनी) तथा संस्मरणा है। हंसिनी हं सः (श्वास उश्वास शब्दों की आवाज) स्वरूपिनी अर्थात् आत्मस्वरूप जो है। जो वामाचार परायण हैं अर्थात् वामेश्वर तन्त्र में प्रसिद्ध वामदेव अघोर आदि प्रतिष्ठत पंच सदाशिव की पूजा प्रवर्तित आचार में परायण, दक्षिण एवं महाचार का उल्लङ्घन करके केवल वामाचार में ही जो लगी है। जो सुन्दर मुकट को धारण करती है अर्थात् ओं रूप से शोभायमान तथा बीज मंत्रों द्वारा रक्षा करने वाली मुद्रा स्वरूपा है जिसका नाम कामाक्षी और जो त्रिमूर्ति स्वरूपा यानी ब्रह्मी, वैश्णवी तथा माहेश्वरी स्वरूप है और जिनका प्रादुर्भाव आपकी विचित्र करुणा द्वारा हुआ है अर्थात् अव्यक्त से त्रिमूर्ति में व्यक्त हुई ऐसी ही महामाया श्री चक्र के प्रिय बिंदु को तृप्त करने में तत्पर है। ॥१६॥

सा बिम्बप्रतिबिम्बलम्बित लसत बिम्बाधरा याम्बिका,
जम्बीरोत्पलकर्णशोभितमुखा जम्बूफल श्रीकुचा ।
नानारत्नकिरीटदीप्तिलसिता प्रत्यक्षदीक्षात्मिका,
श्रीचक्र० ॥१७॥

बिम्ब (मूलरूप) के प्रतिबिम्ब से (परमात्मा तथा जीव जगत्) आश्रित तथा शोभायमान बिम्बफल (काश्मीरी रूपान्तर रच्.फुल) जैसी होंठों वाली जगदम्बा तथा जाम्बीरफल एवं उत्पल्ल (नील कमल) जैसे कानों से शोभित मुखवाली, जामुन के समान कुचाग्र वाली तथा जो नाना प्रकार के रत्नों से जटित मुकट की चमक से सुशोभित हैं तथा प्रत्यक्ष रूप में जो दीक्षामयी है ऐसी श्री राज राजेश्वरी श्री चक्र के प्रिय बिंदु को तृप्त करने में तत्पर है। ॥१७॥

यत्तेजो निधिभिस्त्वनन्त घृणिभिर्नोपाह्यते प्रेरितुम् ।
हार्दं ध्वान्तमपास्य सिक्षणमपि तद्ध्यान मात्रा दृशा ।
यत्सद्भावदनुभाति सर्वमुदितं भानु यथा पद्मिनी ।
प्रत्यग्दाम नमामि तत्तव वपुः श्रीराज राजेश्वरी ॥१८॥

जो हृदय का अंधकार तेज (प्रकाश) के निधि के अनन्त किरणों (घृणि) से हटाया नहीं जा सकता है, परन्तु वही अंधकार क्षनभर में आपका ध्यान करने से आपकी दया दृष्टि से दूर हो सकता है। जैसे सूर्य के उदय होने पर सब सत्पदार्थ [Existing things) तथा कमल खिल उठते हैं। उसी आन्तरिक आपके तेज स्वरूप रूपी प्रत्यक शरीर को में हे श्री राज राजेश्वरी नमस्कार करता हूं। ॥१८॥



क्षमा प्रार्थना

अपराधसहहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्त्र परमेश्वरि ।। १ ।।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ।। २ ।।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीन सुरेश्वरि ।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु पे ।। ३ ।।

अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् ।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ।। ४ ।।

सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ।। ५ ।।

अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्नयूनमधिकं कृतम् ।
तत्सर्व क्षम्यतां देवि प्रसोद परमेश्वरि ।। ६ ।।

कामेश्वरि जगन्मात सच्चिदानन्दविग्रहे ।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ।। ७ ।।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मस्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ।। ८ ।।

।। श्रीदुर्गार्पणमस्तु ।।